अल-मसीह पर ईमान

यह क्या है?

al-masīh par īmān: yih kyā hai?

What Does it Mean to Believe in al-Masih?

by Bakhtullah

[Ao, Khud Dekh Lo 24]

(Urdu—Hindi script)

© 2024 www.chashmamedia.org
published and printed by
Good Word, New Delhi

The title cover is derived from waldryano https://pixabay.com/illustrations/resilience-victory-force-1697546/.

Bible quotations are from UGV.

for enquiries or to request more copies:
askandanswer786@gmail.com

फ़हरिस्त

ईसा मसीह को हक़ीर मत जानो	1
कुफ़र के बुरे नतीजे	3
अपना ईमान छिपाए मत रखो	5
नूर पाकर तारीकी से बचो	6
उसे देखते रहो	7
उस की सुनते रहो	8
इंजील, यूहन्ना 12:37-50	11

जब ईसा मसीह आख़िरी बार यरूशलम में दाख़िल हुआ तो उसका पुरजोश इस्तिक़बाल हुआ। लोग ख़ुशी मनाने लगे। उन्हें लगा कि ईसा मसीह बादशाह बनकर दुश्मन को मुल्क से हटा देगा। लेकिन उसने ऐसा न किया। उसने उन्हें बताया कि मेरी राह हलीमी की राह है। इसके बाद वह छिप गया। यों उसकी खुले-आम ख़िदमत इख़्तिताम पर पहुँचा। उस वक़्त से वह सिर्फ़ अपने शागिर्दों के महदूद दायरे में तालीम देने लगा। इससे पहले कि यूहन्ना यह आख़िरी बातें पेश करता है वह मसीह की आमद का मक़सद और कलाम थोड़े लफ़्ज़ों में दोहराता है।

► **यूहन्ना इस जगह पर यह ख़ुलासा क्यों पेश करता है?**
यूहन्ना हमें साफ़ दिखाना चाहता है कि ईसा मसीह पर ईमान क्या चीज़ है। पहली बात,

ईसा मसीह को हक़ीर मत जानो

ईसा मसीह ने यह तमाम इलाही निशान लोगों के सामने ही दिखाए। तो भी वह उस पर ईमान न लाए। कितनी बड़ी त्रैजेडी! उसने इतने मोजिज़े कर दिखाए थे, तो भी अकसर लोग ईमान न लाए। सब उसका कलाम

सुनकर दंग रह जाते थे। उनके दीनी राहनुमा तो इस तरह की बातें नहीं करते थे। तो भी अकसर लोग ईमान न लाए।

► **ईमान न लाने की क्या वजह थी?**

ईमान न लाने के पीछे एक रूहानी हक़ीक़त थी। सदियों पहले यसायाह नबी फ़रमा चुका था कि

> ऐ रब, कौन हमारे पैग़ाम पर ईमान लाया?
> और रब की क़ुदरत किस पर ज़ाहिर हुई?
> (यूहन्ना 12:38; यसायाह 53:1 से)

► **इसके पीछे रूहानी हक़ीक़त क्या है?**

अकसर लोग ख़ुदा के कलाम पर ईमान नहीं लाएँगे।

► **जब लोग उसका कलाम हक़ीर जानते हैं तो क्या ख़ुदा को इस से कोई फ़रक़ नहीं पड़ता?**

उसे ज़रूर फ़रक़ पड़ता है। यूहन्ना, यसायाह नबी का हवाला लेकर फ़रमाता है,

> अल्लाह ने उनकी आँखों को अंधा
> और उनके दिल को बेहिस कर दिया है,
> ऐसा न हो कि वह अपनी आँखों से देखें,
> अपने दिल से समझें,
> मेरी तरफ़ रुजू करें

> और मैं उन्हें शफ़ा दूँ।
> (यूहन्ना 12:40; यसायाह 6:9-10 से)

► **जब कोई ख़ुदा का कलाम हक़ीर जानता है तो ख़ुदा का क्या जवाब है?**

ख़ुदा होने देता है कि ऐसा शख़्स रूहानी बातों के लिए इतना अंधा और बेहिस हो जाए कि वह आइंदा शायद ही तौबा करके रूहानी शफ़ा पाए।

► **यूहन्ना लोगों का कुफ़र क्यों इतनी सख़्ती से पेश करता है?**

वह नहीं चाहता कि हम ईसा मसीह का कलाम और काम हक़ीर जानने से उस नजात से महरूम रह जाएँ जो ईसा मसीह के वसीले से मिलती है। आगे वह कुफ़र के बुरे नतीजों पर और ज़ोर देता है।

कुफ़र के बुरे नतीजे

यूहन्ना फ़रमाता है कि

> यसायाह ने यह इसलिए फ़रमाया क्योंकि उसने ईसा का जलाल देखकर उसके बारे में बात की।
> (यूहन्ना 12:41)

► **यसायाह नबी तो कई सदियों पहले मर चुका था। उसने किस तरह ईसा मसीह का जलाल देख लिया था?**

यूहन्ना का कहना है कि ख़ुदा और ईसा मसीह का जलाल एक ही है। जहाँ ख़ुदा बाप है वहाँ ख़ुदा बेटा भी होता है। जब नबी ने रोया में ख़ुदा का जलाल देखा तो उसने ईसा मसीह का जलाल भी देखा।

यों मसीह का जलाल नबी पर ज़ाहिर हुआ। तब ख़ुदा ने फ़रमाया कि मेरा पैग़ाम सुनाकर तू लोगों के दिलों को बेहिस कर डालेगा। नबी ने पूछा कि मैं कब तक कलाम सुनाऊँ? उसे जवाब मिला कि उस वक़्त तक कि मुल्क के शहर वीरानो-सुनसान, उसके घर ग़ैरआबाद और उसके खेत बंजर न हों (यसायाह 6:11)। यह पेशगोई नबी के जीते-जी पूरी हुई : इसराईल बरबाद हुआ और क़ौम मुख़्तलिफ़ मुल्कों में तित्तर-बित्तर हुई।

► **यूहन्ना इस हवाले से क्या कहना चाहता है?**

जिस तरह इसराईलियों ने यसायाह नबी का कलाम रद किया था उसी तरह अकसर लोगों ने ईसा मसीह का कलाम रद किया है। यसायाह नबी का पैग़ाम रद करने से लोगों के दिल रूहानी सच्चाइयों के लिए अंधे हो गए और नतीजे में पूरा मुल्क तबाह हुआ। इसी तरह ईसा मसीह का कलाम रद करने से लोगों के दिल रूहानी सच्चाइयों के लिए अंधे हो गए और बाद में पूरा मुल्क बरबाद हुआ, बेशुमार यहूदी मुख़्तलिफ़ मुल्कों में तित्तर-बित्तर हुए।

► **क्या आप समझते हैं कि ईसा मसीह एक अज़ीम नबी है और बस?**

यह काफ़ी नहीं है। इससे नजात नहीं मिलेगी। इससे आप गुनाह के बुरे नतीजों से नहीं बचेंगे। इससे आप ख़ुदा की नज़र में मंज़ूर नहीं हो जाएँगे, आप जन्नत में दाख़िल नहीं हो पाएँगे।

लेकिन यूहन्ना हमें एक और क़िस्म की बेईमानी से भी ख़बरदार रखना चाहता है। वह फ़रमाता है कि

अपना ईमान छिपाए मत रखो

पूरी क़ौम ने तो ईसा मसीह को रद नहीं किया था। काफ़ी लोग उस पर ईमान रखते थे। कुछ राहनुमा भी उनमें शामिल थे, हालाँकि वह दूसरों के बाइस यह बात खुले तौर से नहीं कहते थे।

► **यह राहनुमा क्यों खुले तौर से नहीं कहते थे कि हम ईमान रखते हैं?**

यूहन्ना फ़रमाता है कि वह नहीं चाहते थे कि उन्हें यहूदी जमात से निकाला जाए। वह अल्लाह की इज़्ज़त की निसबत इनसान की इज़्ज़त को ज़्यादा अज़ीज़ रखते थे।

► **इससे हम क्या सीखते हैं?**

उन लोगों जैसे मत बनो जो ईमान तो लाए थे फिर भी यह बात छिपाए रखते थे। जब हम अपना ईमान छिपाते हैं तो हम ईसा मसीह को दुख पहुँचाते हैं। यूहन्ना फ़रमाता है कि यह नहीं चलेगा कि तुम अल्लाह की इज़्ज़त की निसबत इनसान की इज़्ज़त ज़्यादा अज़ीज़ रखो।

अब तक यूहन्ना ने खुले तौर से ईमान रखने पर ज़ोर दिया। लेकिन ईसा मसीह पर ईमान है क्या? इसका जवाब वह अब देता है। पहले,

नूर पाकर तारीकी से बचो

ईसा मसीह ने फ़रमाया,

> मैं नूर की हैसियत से इस दुनिया में आया हूँ ताकि जो भी मुझ पर ईमान लाए वह तारीकी में न रहे।
> (यूहन्ना 12:46)

► **नूर का अंधेरे पर क्या असर होता है?**
जहाँ नूर की तेज़ रौशनी फैलती है वहाँ अंधेरा दूर हो जाता है। जिसके दिल में नूर बसने लगे उससे अंधेरा दूर हो जाता है।

► **नूर किस तरह मिलता है?**
ईसा मसीह पर ईमान लाने से। वह ख़ुद नूर है।

► **उस पर ईमान क्यों इतना ठोस है (आयत 44)?**
इसलिए कि उसे ख़ुदा बाप से भेजा गया है। जो उस पर ईमान रखे वह ख़ुदा बाप पर ईमान रखता है।

ग़रज़, ईसा मसीह ख़ुदा बाप से भेजा गया नूर है, और सिर्फ़ उसे पाने से इनसान तारीकी से बचेगा। यों पहला क़दम यह है कि हम इलाही नूर यानी मसीह को पाकर उससे भर जाएँ।

► **हम किस तरह यह नूर पा सकते हैं?**

ईसा मसीह और उसका कलाम क़बूल करने से। तब यह नूर हमारे अंदर फैलने लगता, चमकने-दमकने लगता है।

दूसरी बात,

उसे देखते रहो

ईसा मसीह ने यह भी फ़रमाया,

> जो मुझे देखता है वह उसे देखता है जिसने मुझे भेजा है। (यूहन्ना 12:45)

- **हम किस तरह ईसा मसीह को देख सकते हैं?**
  ईमान लाने से वह हमारे दिलों में बसने लगता है। तब हम ईमान में उसे देख सकते हैं। और उसे देखकर हम ख़ुदा बाप को भी देख सकते हैं।
- **हम मसीह के ज़रीए ख़ुदा बाप को क्यों देख सकते हैं?**
  इसलिए कि वह ख़ुदा का नूर है जो इस दुनिया में भेजा गया ताकि हमें रौशन करके बचाए। ख़ुदा बाप सूरज जैसा है जबकि ईसा मसीह उसकी रौशनी है, उसका नूर जो इस दुनिया में आ गया है। हम सूरज को सिर्फ़ नूर के ज़रीए देख सकते हैं।
- **ग़रज़ ईमानदार को क्या करना है?**
  उसे बस मसीह को देखता रहना है जो नूर है। मसीह को देखने से उसकी ज़िंदगी नूर और पाकीज़गी से भर जाएगी। तीसरी बात,

उस की सुनते रहो

इनसान अपनी आँखों से देखता है। देखने से वह ख़ुदा का नूर पाता है। अब ईसा मसीह सुनने की बात भी छेड़ता है : इनसान अपने कानों से सुनता है, तब जवाब में चलने लगता है। ईसा मसीह ने फ़रमाया,

> जो मेरी बातें सुनकर उन पर अमल नहीं करता मैं उसकी अदालत नहीं करूँगा, क्योंकि मैं दुनिया की अदालत करने के लिए नहीं आया बल्कि उसे नजात देने के लिए। तो भी एक है जो उसकी अदालत करता है। जो मुझे रद करके मेरी बातें क़बूल नहीं करता मेरा पेश किया गया कलाम ही क़ियामत के दिन उसकी अदालत करेगा। (यूहन्ना 12:47-48)

हम बहुत कुछ सुनने के आदी हो गए हैं। हमारे हुक्मरान बड़े बड़े वादे करते हैं जो बाद में अधूरे रह जाते हैं। इंटरनेट के दौर में हर एक ने अपने आपको अच्छी तरह पेश करना सीख लिया है। हर एक ने दूसरों को मनवाने का गुर अपना लिया है।

बहुत कुछ सुनने में आता है जो हम सीधे ताक़ पर रखकर भूल जाते हैं। और सच कहें, अगर ऐसे न करते तो बार बार मायूस हो जाते। इसलिए ज़रूरी है कि हम मसीह की हिदायत पर ध्यान दें कि मेरी सुनो। मतलब है मेरी बातें सुनकर उन पर अमल करो। जिसके अंदर नूर है वह ख़ुद

बख़ुद उसकी सुनता रहेगा। वह यह बातें महफ़ूज़ रखेगा, और उनका उसकी ज़िंदगी पर गहरा असर पड़ेगा।

ईसा मसीह की बातें ताक़ पर रखकर छोड़ेंगे तो समझ लो कि आप नहीं बचेंगे।

► **आप क्यों नहीं बचेंगे? क्या ईसा मसीह ने नहीं फ़रमाया था कि मैं अदालत करने नहीं आया?**

ज़रूर। बात यह है कि उसका कलाम ही आपकी अदालत करेगा। उसका कलाम रद करने से आपकी अदालत हो चुकी होगी।

► **लेकिन क्या हम उसकी सारी बातों पर अमल कर पाएँगे? क्या कुछ न कुछ अधूरा नहीं रहेगा?**

बेशक। बात यह नहीं है। अमल करने के पीछे जो यूनानी लफ़्ज़ है उसका मतलब महफ़ूज़ रखना भी है। अमल करने का पहला क़दम मसीह की बातें अपने दिल में महफ़ूज़ रखना है। जब हम नूर की धूप सेंकते रहते हैं तो उसका कलाम भी हमारे दिल में बैठकर फल लाता है। बड़ी बात यह नहीं कि हम हर बात पर पूरे उतरें। बड़ी बात यह है कि ईसा मसीह जो हमारा नूर है हमारे अंदर बसे और अपनी बातें हरकत में लाए। वह हमारा अज़ीम उस्ताद है, और वह जानता है कि हम उसके कमज़ोर शागिर्द हैं। बड़ी बात यह है कि वह हमारा हाथ थामे साथ चले।

► **क्या नूर आपके दिल में बसा हुआ है? क्या वह आपका हाथ थामे आपके साथ चल रहा है?**

यों यूहन्ना हमें आगाह करता है कि ईसा मसीह को हक़ीर मत जानो बल्कि उस पर ईमान लाओ। और यह ईमान छिपाए मत रखो। क्योंकि ईसा मसीह **नूर** है, और नूर की फ़ितरत यह है कि वह फैल जाए।

► **ईमानदार को क्या करना है?**

- पहले, उसे देखते रहो ताकि उसका नूर आप में फैलता जाए, आप में चमकता-दमकता रहे।
- दूसरे, उसकी आवाज़ सुनकर उसकी राहों पर चलते रहो। सबसे बड़ी बात यह कि उसका हाथ थामे रखो। तब जन्नत की राह यक़ीनी है।

हक़ीक़त में ईसा मसीह पर ईमान सबसे मुश्किल और सबसे आसान काम है।

► **उस पर ईमान सबसे मुश्किल काम क्यों है?**

जब हम उसके शागिर्द बन जाते हैं तो वह चाहता है कि हम अपना ईमान छिपाए न रखें। साथ साथ वह चाहता है कि हम उसकी राह पर चलें। मतलब है मुहब्बत की राह पर। हलीमी की राह पर।

लेकिन उस पर ईमान सबसे आसान काम भी है।

► **उस पर ईमान सबसे आसान काम क्यों है?**

हमें सिर्फ़ उस पर ईमान लाना है जो नूर है। तब वह हमारे अंदर फैलकर हमें अपनी मुहब्बत से भर देगा, हमारा हाथ थामे हमारे साथ चलेगा। अदालत के दिन जब उस का कलाम हमारा सामना करेगा तो हमें कोई नुक़सान नहीं पहुँचेगा, क्योंकि हमारे अंदर बसने वाला नूर हमें बचाए रखेगा। वही हमें जन्नत तक पहुँचाएगा।

इंजील, यूहन्ना 12:37-50

अगरचे ईसा ने यह तमाम इलाही निशान उनके सामने ही दिखाए तो भी वह उस पर ईमान न लाए। यों यसायाह नबी की पेशगोई पूरी हुई,

> ऐ रब, कौन हमारे पैग़ाम पर ईमान लाया?
> और रब की क़ुदरत किस पर ज़ाहिर हुई?

चुनाँचे वह ईमान न ला सके, जिस तरह यसायाह नबी ने कहीं और फ़रमाया है,

> अल्लाह ने उनकी आँखों को अंधा
> और उनके दिल को बेहिस कर दिया है,
> ऐसा न हो कि वह अपनी आँखों से देखें,
> अपने दिल से समझें,
> मेरी तरफ़ रुजू करें
> और मैं उन्हें शफ़ा दूँ।

यसायाह ने यह इसलिए फ़रमाया क्योंकि उसने ईसा का जलाल देखकर उसके बारे में बात की।

तो भी बहुत-से लोग ईसा पर ईमान रखते थे। उनमें कुछ राहनुमा भी शामिल थे। लेकिन वह इसका अलानिया इक़रार नहीं करते थे, क्योंकि वह डरते थे कि फ़रीसी हमें यहूदी जमात से ख़ारिज कर देंगे। असल में वह अल्लाह की इज़्ज़त की निसबत इनसान की इज़्ज़त को ज़्यादा अज़ीज़ रखते थे।

फिर ईसा पुकार उठा, "जो मुझ पर ईमान रखता है वह न सिर्फ़ मुझ पर बल्कि उस पर ईमान रखता है जिसने मुझे भेजा है। और जो मुझे देखता है वह उसे देखता है जिसने मुझे भेजा है। मैं नूर की हैसियत से इस दुनिया में आया हूँ ताकि जो भी मुझ पर ईमान लाए वह तारीकी में न रहे। जो मेरी बातें सुनकर उन पर अमल नहीं करता मैं उसकी अदालत नहीं करूँगा, क्योंकि मैं दुनिया की अदालत करने के लिए नहीं आया बल्कि उसे नजात देने के लिए।

तो भी एक है जो उसकी अदालत करता है। जो मुझे रद करके मेरी बातें क़बूल नहीं करता मेरा पेश किया गया कलाम ही क़ियामत के दिन उसकी अदालत करेगा। क्योंकि जो कुछ मैंने बयान किया है वह मेरी तरफ़ से नहीं है। मेरे भेजनेवाले बाप ही ने मुझे हुक्म दिया कि क्या कहना और क्या सुनाना है। और मैं जानता हूँ कि उसका हुक्म अबदी ज़िंदगी तक पहुँचाता है। चुनाँचे जो कुछ मैं सुनाता हूँ वही कुछ है जो बाप ने मुझे बताया है।”